बच्चों के पालन–पोषण पर माता–पिता का प्रभाव

डॉ० ओम प्रकाश केशरी

रूपाली रानी

एक नवजात शिशु जब जन्म लेता है, तब न तो वह समाजिक होता है और न ही असामाजिक। वह तो नितान्त असहाय दशा में होता है, जिसका लालन–पालन, देख–रेख, सेवा–सुश्रुषा का भार माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों पर होता है। इस समय यदि शिशु को यों ही छोड़ दिया जाय, तो निश्चित ही उसकी मृत्यु हो जाती है और वह सदा–सदा के लिए मृत्यु की गोद में समा जाता है। परन्तु जब नवजात शिशु की अच्छी परवरिश की जाती है, ठीक ढंग से लालन–पालन किया जाता है, चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध करवायी जाती हैं, पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाया जाता है, अच्छी शिक्षा–दीक्षा दी जाती है, तब वही शिशु शनैः–शनैः बढ़कर किशोर और युवा बनता है तथा माता–पिता के कार्यों में सहयोग देने लगता है। उसके भीतर मान्यता प्राप्त व्यवहारों का विकास होने लगता है, जिससे वह सामाजिक प्राणी बनता है। सुन्दर गुणों से विभूषित होकर वह देश का कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनता है। अब वही बालक, जो जन्म के समय नितान्त असहाय दशा में था, वह दूसरों की सहायता करने लगता है, सहारा देने लगता है। वृद्धावस्था में वह बुढ़ापे की लाठी बन जाता है तथा माँ–बाप की सेवा–सुश्रुषा करने लगता है। वह अपने पिता के व्यवसाय, काम–धंधे को आगे बढ़ाता है तथा देश का जिम्मेदार नागरिक बनता है।